International Indexed & Referred Journal, January,2013, ISSN 0974-2832, RNI- RAJBIL; VOL- IV * ISSUE- 48

शोध पत्र – संगीत

आगरा घराने की कुछ प्रसिद्ध बंदिशें एवं उनके रचनाकार

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल, संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

आगरा घराना अपने आप में एक प्रसिद्ध घराने के रूप जाना जाता है। अनेकों सुप्रसिद्ध गायको को इस घराने ने जन्म दिया है जिनमे प्रमुख हैं – गुलाम अब्बास के भाई 'कल्लन खाँ' । 'कल्लन खाँ' के पुत्र 'तसद्दुक खाँ' थे। उस्ताद फैयाज खाँ' जो कि प्रसिद्ध गायक थे। ''उस्ताद फैयाज खाँ ने इस घराने को बहुत प्रसिद्धि दिलाई। विलायत हुसैन खाँ, नत्थन खाँ, गुलाम अब्बास खाँ भास्कर राव इत्यादि इसके प्रसिद्ध गायक रहे।[1] आगरा घराने के सुप्रसिद्ध गायक 'उ0 फैयाज खाँ' थे ''गुलाम अब्बास खाँ ने फैयाज खाँ को छुटपन से अपने पास रखा और शिक्षा दी और गवैया तैयार किया। फैयाज खाँ रिश्ते में रंगीले घराने के थे मगर अपने ननिहाल से वह आगरा घरने में सम्मिलित थे। अपनी गायन परम्परा और शिक्षा की दृष्टि से वह आगरा घराने के ही थे। अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण वह इस पिछले युग में इस घराने के सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय गायक माने जाते हैं।[2] हाजी–सुजान खाँ इस घराने के जन्मदाता कहे जाते हैं यह तानसेन के दामाद थे। अकबर के समय में जब काबुल से आये हुए मिशन की तरफ से दरबार में गाने की फरमाइस हुई, तब सुजान सिंह ने 'दीपक राग' गाकर लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया। उनको बादशाह की तरफ से 'दीपक ज्योति' की उपाधि से विभूषित किया गया।[3]

'हाजी सुजान खाँ'जो ध्रुपद एवं धमार शैलियों के विशेषज्ञ थे। इन्हीं के वंश में 1780 में 'श्याम रंग' नाम के एक गायक हुए जो 'नौहार' बानी के धरुपद के माने हुए विशेषज्ञ थे। 'श्याम रंग' के छोटे पुत्र का नाम 'घग्घे खुदाबख्श' था और इनका जन्म आगरा में सन् 1800 में हुआ था। इन्होंने अपने घरानें की ध्रुपद–धमार शैली की उत्तम शिक्षा पाई थी आधुनिक युग में घग्घे खुदाबख्श ही आगरा घराने के अन्वेषक व मार्गदर्शक माने जाते हैं।[4] सभी घरानों में आगरा घरानें की अपनी एक विशिष्ट जगह है। इस घराने के गायकों ने संगीत को एक उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया।''हाजी सुजान खाँ की रचनाओं में 'सुजान' नाम की छाप अंकित मिलती है उन्हीं का रचा हुआ ध्रुपद, जिसे इस घराने के वर्तमान कलाकार राग 'जोग' में गाते हैं यहां उद्धत किया जा रहा है–

jkx% tkSx

स्थायीः प्रथम मान अल्लाहए जिन रचो नूरे पाक
नवीजी पे रख ईमान एए रे सुजान

अन्तराः वलियन मान शाहे मरदानए ताहिर मन सैयदा
इमाम मान हसनेनए दीन मान कलमा किताब मान कुरान[5]

'घग्घे खुदाबख्श ने ग्वालियर में जाकर 'नत्थन पीर बख्श' से शिक्षा ली और उनकी घघ्घी आवाज का दोष जाता रहा था। जब यह आगरे लौटकर आये तो लोग इनकी आवाज सुनकर दंग रहे गये।[6] गुलाम अब्बास घघ्घे खुदाबख्श के पुत्र थे जिन्होंने आगरा घराने की प्रचलित शैलियों को आगे बढ़ाया। आज आगरा घराने की प्रचलित बहुत सी विशेषताओं को इन्होंने ही नया आयाम दिया।उस्ताद फैयाज खाँ इस घराने में ख्याल गायकी के सर्वश्रेष्ठ गायक माने जाते थे। इनकी गायकी का रंगीलापन अन्यत्र कहीं देखने की नहीं मिलता।

''उस्ताद फैयाज खाँ का तल्खुलुस ''प्रेम–प्रिया'' था। इनके द्वार रचित स्थाइयाँ, ठुमरी, होरी और रसिये आज भी लोगों के दिलों में गुंजन पैदा करते हैं।आप स्वर्गीय सहगल के उस्ताद भी थे। कहा जाता है कि विहाग में 'झन झन झन झन पायल बाजै' सुनकर ही सहगल उस्ताद फैयाज खाँ के शार्गिद बनने को आतुर हो गये थे और बाद में स्व0 सहगल ने अपना सर्वोत्तम रिकार्ड ''झुलना झुलारी आ मोरी अमवा की डार पर कोयलिया बोले'' उस्ताद फैयाज खाँ को भेंट किया था।[7] उस्ताद फैयाज खाँ ''आफताबे मुसिकी'' खिताब से बड़ौदा नरेश ने सम्मानित किया था। इस घराने के प्रसिद्ध गायक उस्ताद फैयाज खॉ कहा करते थे कि ''श्रोता की ऑख से ऑख मिलाने से संगीत का मिजाज बनता है'' जब तक इस प्रकार का पारस्परिक सम्बन्ध दोनो में नही होता तब तक संगीत का पूरा आनन्द दोनो मे से एक को भी नहीं आता यह बड़ा सार सारगर्भित तत्व है।[8] इनके प्रमुख शिष्यें में थे– ''श्रीकृष्ण नारायण रतनजनकर' 'दिलीप चन्द्र बेदी', 'अताहुसैन', सुशील कुमार चौबे, 'स्वर्गीय स्वामी' वल्लभादास, रजनीकान्त देसाई, और सोहन सिंह इत्यादि के नाम भी उल्लेखनीय हैं।[9] इनके द्वारा रचित एक बंदिश इस प्रकार है –

jkx%ekydkS'k
rky%rhurky
y;% e/;y;
Lojc)%Q¸;kt [kku ^çse&fi;k*
cfn'k%&

कान्हा करत मोसे रार करार बाट माही
एकहूँ न माने वो तो आली बात मोरी ।
अंतराः *बीच में रोके ठाडो गैल 'प्रेम' देखो*
चूरियां सारी तडकत जात मोरी ।।

इनके अलावा इस घराने के अनेकों शिष्य हुए 'गिरिजाबाई कलेकर', 'गजानन राव जोशी', 'पं0 दिलीप चन्द्र बेदी', 'अब्दूल कादर खाँ', 'बंदे हुसैन खाँ', 'मोगू बाई कुर्डीकर', 'स्वामी बल्लभदास', 'जगन्नाथ बुआ', 'ताराबाई शिराडेकर' इत्यादि।

आगरा घराना प्रसिद्ध घराना ध्रपद गायकी के लिए माना जाता है। स्वरों का लगाव खुला व स्पष्ट होता है। इस घराने में ध्रुवपद की नौहार वाणी प्रमुख रही। ''इस घराने में नोम–तोम का आलाप खुली और जोरदार आवाज ख्याल के अलावा ध्रुवपद धमार में प्रवीणता, ठुमरी में प्रवीणता, स्थायी की दूसरी पंक्ति को स्थायी बनाना, बोल तानों में कुशलता स्वर गुच्छे, राग विस्तार, चंचल रागों पर पकड़, गुरु के पीछे शिष्यों का स्थायी कायम रखना और आवाज लगाना मुख्य विशेषताओं के रूप में सामने आए।[10]

यह घराना ध्रुपद गायकी का घराना होने के कारण लय की पकड़ बहुत मजबूत थी। इसके अलावा इस घराने के सभी गायक ताल के मर्मज्ञ थे। इसी कारण वे बंदिशों को बहुत सुन्दर ढंग से पेश करते थे। ''चीजों की नई–नई रचना के विषय में आगरा घराने के गायक वर्ग सृजनशील रहे हैं।दरसपिया (मेहबबू खाँ) सरसपिया (काले खाँ), विनोद पिया (तसद्दुक हुसैन खाँ) ऐसे उपनामों से आगरा घराने के घरंदाज गवैयों ने बहुत सी चीजों की बंदिशें बनाई हैं।[11] इस घराने में रागों की शुद्धता एवं बंदिशो के सुन्दर उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। रागों की शुद्धता का अर्थ यह नहीं कि उसमें निरसता आ जाए बल्कि शास्त्रीयता का ध्यान रखते हुए सरस एवं रस से ओत–प्रोत अभिव्यक्ति।दरस पिया(महबूब खान) द्वारा रचित एक बंदिश निम्नवत है –

रागःबिहागंडा
तालःतीनताल
लयःमध्यलय
स्वरबद्धः महबूब खान 'दरसपिया'

बंदिशः–
स्थाईः *रैन दिना कसे कटे री दईया*
ना मोरे आये सईया ।
अंतराः *दरस पिया बिन होत मलिन अती*
पलपल देह घटे री दईया ।।
रागःबिहागपट
तालःतीनताल
लयः मध्यलय
स्वरबद्धःअल्ताफ हुसैन खान 'रामदास'
बंदिशः–
स्थाईः माई री मेरो मन अटक्यो वा बटेऊके संग ।
अंतराः रामदास बिन जोग लियो मुख पे पीरो रंग । ।

''आगरा घराने के गायक सधी हुई आवाज में लाग डाट रखते हुए विकट तानें लेते हैं। बोलतान व लयकारी भी अच्छी होती है गायक कल्पनाशील होते हैं तथा भावुकता इनके गायन में झलकती हैं।[12] विलायत हुसैन द्वारा स्वरबद्ध एक बंदिश इस प्रकार है

रागः कल्यान
ताल : तीनताल
लय : मध्यलय
स्वरबद्धः विलायत हुसैन खान '

बंदिशः–
स्थाईःलगन लागी सुन्दर श्याम सलोने पीया संग ।
अंतराः 'प्राणपिया'जब आएंगे मोरे निकट सखी
सूझत ना मिलवे को कछु ढंग । ।
इस घराने में रग–विस्तार स्वरो का उच्चारण, ताल का पक्का होना प्रमुख विशेषता थी। आगरा घराने के सुप्रसिद्ध गायक श्री कृष्णनारायण रतनजानकर 'सुजान' द्वारा रचित राग अडाना की एक बंदिश निम्नवत है स्वरबद्धः श्री कृष्णनारायण रतनजानकर *'सुजान'*

रागः अडाना
तालः तीन ताल
लयःमध्य लय
स्थायीः
थेई ता थेई ता थेई थेई ता
निरत करत श्याम सुन्दर ।
अन्तराः *झांझ मृदंग ढफ ताल परन संग*
नाचत आनंदसो दिग दिग ता दिग दिग थेई ।।

नोम–तोम में आकर, अकार इकार–उकार,–मकार नकार सहित अक्षर बोलो में ध्रुपद धमार या ख्याल की चीजों के बोलो के उच्चारण के समय भी खुला व स्पष्ट रहता है। मींड गमक के साथ भी स्वरों का लगाव इसमें खडेघ्पन के पक्ष में रहता हैं स्वरोउच्चारण का यह ढंग आगरा घराना की गायकी में एक विशिष्ट अंग सा बना रहता है।[12] राग पूरिया की यह बंदिश जो की चिंतामन रघुनाथ व्यास 'गुनिजन' द्वारा स्वरबद्ध है ,जिसमे बोलों का स्पष्ट उच्चारण देखने को मिलता है–

रागःपुरिया
तालःएकताल
लयः द्रुत बंदिश
स्वरबद्धःचिंतामन रघुनाथ व्यास 'गुनिजान'

बंदिशः–
स्थाईः *सुन री एरी आज मैका*
पाई संदेसा पिया का

आगम की निकी बात ।
अंतराः शुभ घडी शुभ सगुन भये
बिगरी मोरी नीद
जागी बैठी हूँ सारी रैन ।।

''आगरा घराना की लय न विलंबित और न मध्य लय से तेज होती है। ऐसी ही लय में राग, रचना, भाषा, तान व लय सबका पूरा आनन्द आता है। इसलिए इस गायकी को हम बहुमुखी और सर्वांग सम्पन्न गायकी कहते है। स्वर और लय रूप इस गायकी के हृदय की धड़कने है।[14]

रागःललित तालःतीनताल
लयः विलम्बित
स्वरबद्धःरमजान खान 'रंगीले'

बंदिशः–
स्थाईः *सौ सौ बार बलमा ,तुमसो सौ बात कही है*
मन में कपट और झूठी बात ।
अंतराः *हम बूझत जब मुकर जाते हो*
यही तिहारी रीत रंगीले
सौतन के घर की रुतु मानी
दो दो दिन और दो दो रात । ।

रागःपुरिया
तालःएकताल
लयः द्रुत बंदिश
स्वरबद्धःचिंतामन रघुनाथ व्यास 'गुनिजान'
बंदिशः *सुन री एरी आज मैका*
पाई संदेसा पिया का
आगम की निकी बात ।
अंतराः *शुभ घडी शुभ सगुन भये*
बिगरी मोरी नीद
जागी बैठी हूँ सारी रैन ।।

आगरा अपनी ध्रुपद एवं ख्याल गायकी के लिए प्रसिद्ध था इस घराने के गायको ने झुमरा ताल, त्रिताल, एकतल, झपताल में इत्यादि तालो में बंदिशों को सुन्दर ढंग से बाँध कर र्प्रस्तुत किया था। ''चौड़ी बुलन्द आवाज लय से सराबोर गायकी आगरा घराने की प्रधानता रही। स्वर रेंफकर, ठेलकर, खुरचकर लगाने की पद्धति आगरा शैली का अंग बन गई। इस ढंग को फैयाज खॉ की दमदार नीचे के स्वरों का लगाव, नोम–तोम में अकार, इकार उकार सहित बोलों में स्पष्टता खॉ साहब की विशिष्टता थी।[15] झपताल,रूपक तीनताल द्रुत ,एव तीनताल मध्यलय में निबद्ध इस घराने की कुछ प्रसिद्ध बंदिशें निम्नवत है–

रागःश्री तालःझपताल
लयःबिलंबित
स्वरबद्धःखादिम हुसैन खान 'सजनपिया'

बंदिशः–
स्थाईःगरीब नवाज हो ख्वाजा दुखियन
के दुःख दूर करत हो तुम।
अन्तराः सजन गरीब दरबार को सेवक आया हूँ शरण
तेहारे ।।

रागःभूप तालः रूपक
लयः मध्यलय स्वरबद्धः दिनकर कैकिनी 'दिनरंग'

बंदिशः–
स्थाईः सुरन की धरन मुरन को जानले प्यारे तब आवेगो
राग की भरन। अंतराः साचे सुर रिझाये,गुरु सुजन
देत आसीस मन भये पावन।।

रागःबसंत–बहार
तालःतीनताल
लयः द्रुत
स्वरबद्धःशराफत हुसैन खान 'प्रेम रंग'

बंदिशः–
स्थाईः *सावरे सलोने मदभरे नेहा लगाए*
मोह लियो मन कल नहीं आये
नेक नजर छब दिखलाय ।
अन्तराःआन–बान शान तोरी जिया में मोरी लागे
आई री बसंत बहार प्रेम रंग किसबिध दर्शन पाए ।।

रागःकल्यान तालःतीनताल
लयःमध्यलय
स्वरबद्धःविलायत हुसैन खान '

बंदिशः–
स्थाईः *लगन लागी सुन्दर श्याम सलोने पीया संग ।*
अंतराः ^*प्राणपिया'जब आएंगे मोरे निकट सखी*
सूझत ना मिलवे को कछु ढंग । ।

fu"d"kr%

यह घराना गायन की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध रहा है। इस घराने में बंदिशों को सजाने के लिए अलग अलग प्रकार के अलंकरण का प्रयोग करते थे जैसे दृ अलाप ,तान , बोल–बनाव , बोल–बाट इत्यादि जोकि बंदिशों में कल्पनाशक्ति को निश्चितरूप से बढाता है जो इस घराने की प्रमुख विशेषता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत– अंजलि मित्तल पृ0 85
2. हमारा आधुनिक संगीत– डॉ0 सुशील कुमार चौबे पृ0 228
3. हमारा आधुनिक संगीत– डॉ0 सुशील कुमार चौबे पृ0 228
4. भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत अंजलि मित्तल पृ0 85
5. उस्ताद विलायत हुसैन खाँ जयति मैत्रा (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)पृ01.2
6. हमारा आधुनिक संगीत– डॉ0 सुशील कुमार चौबे पृ0 227
7. भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण डॉ0 स्वतंत्र शर्मा पृ0 215
8.. हमारा आधुनिक संगीत डॉ0 सुशील कुमार चौबे – पृ0 230, 239
9. हमारा आधुनिक संगीत– सुशील कुमार चौबे– पृ0 229
10. भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत– अंजलि मित्तल पृ0 85
11. उस्ताद विलायत हुसैन खाँ, व्यक्तित्व एवं कृतित्व जयतिमैत्रा पृ015
12. भारतीय संगीत और संगीत– राम लाल माथुर पृ0 47
13. उस्ताद विलायत हुसैन खॅः व्यक्तित्व एवं कृतित्व जयति मैत्रा पृ0 –
14.हमारा आधुनिक संगीतः– डॉ0 सुशील कुमार चौबे – पृ0 233
15. भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण– डॉ0 स्वतंत्र शर्मा पृ0 216